हिन्दी साहित्य में प्रस्तावित शोध कार्य

की

रूपरेखा

<u>''दादू पंथी थाम्भों का दादू पंथ साहित्य विकास में योगदान''</u>

The Contribution of Dadu Cult Thambas in the development of Dadu Cult literature.

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

को

हिन्दी साहित्य में पीएच.डी. डिग्री

के

पंजीकरण हेतु प्रस्तुत

सत्र–2014

निर्देशक

डॉ. विमला सिंहल
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भीलवाड़ा (राज.)

डॉ. (श्रीमती) विमला सिंहल
विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग
माणिक्यलाल वर्मा
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भीलवाड़ा (राज.)

शोधकर्ता

चिरंजीलाल बागड़ी
व्याख्याता हिन्दी
राजकीय उच्च माध्यमिक
विद्यालय, महला, जयपुर

Scanned with CamScanner

परिशिष्ट V

1. शोधार्थी का नाम	(हिन्दी में)	:	चिरंजी लाल बागड़ी
	(अंग्रेजी में)	:	CHIRANJEE LAL BAGDI
2. शोध का विषय	(हिन्दी में)	:	दादू पंथी थाम्भों का दादू पंथ साहित्य विकास में योगदान
	(अंग्रेजी में)	:	The Contribution of Dadu Cult Thambas in the development of Dadu Cult literature.

3. शोध कार्य स्थल

(क) संस्था / विभाग जहां कार्य किया जा रहा है–	:	हिन्दी विभाग माणिक्य लाल वर्मा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भीलवाड़ा।
(ख) अनुसंधान की भौगोलिक स्थिति	:	दादू पीठ की सभी थाम्भे
4. प्रस्तावित शोध कार्य की प्रस्तावना महत्ता और उद्देश्य	:	संलग्न 1
5. प्रस्तावित विषय पर पूर्व में किये गये कार्यों की समीक्षा	:	संलग्न 2
6. प्रस्तावित शोध क्षेत्र में शोध संबंधी रिक्तता	:	संलग्न 3
7. मुख्य प्राक्कल्पना	:	संलग्न 4
8. सामग्री और विधि / शोध पद्धति	:	संलग्न 5
9. संदर्भ ग्रन्थ सूची	:	संलग्न 6
10. प्रस्तावित शोध कार्य की अध्याय योजना	:	संलग्न 7

संक्षिप्त प्रस्तावित रूपरेखा का अनुमोदन

28.11.14

डॉ. विमला सिंहल
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
मा. ला. वर्मा राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भीलवाड़ा (राज.)

शोध निर्देशक के हस्ताक्षर
दिनांक सहित

28/11/2014

अभ्यर्थी के हस्ताक्षर
दिनांक सहित

Scanned with CamScanner

शोध कार्य स्थल (Location)

(क) संस्था–

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए मैने एम.एल.वी. राजकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, भीलवाड़ा को चुना। मेरे शोध निर्देशक श्रीमती डॉ. विमला सिंघल इसी महाविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष है। म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर में शोध निर्देशक के रूप में पंजीकृत है। यह महाविद्यालय शोध कार्य करने सम्बन्धी सभी प्रकार की मूलभूत सुविधाओं से युक्त है।

(ख) अनुसंधान की भौगोलिक स्थिति–

संत दादू दयाल के 52 प्रमुख शिष्य हुए जो थाम्भों के नाम से जाने जाते हैं। राजस्थान में जहाँ जहाँ यह शिष्य (थाम्भे) अपनी पीठ बनाकर रह रहे हैं वहाँ वहाँ जाकर उनसे सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी लेना।

अतः अनुसन्धान की भौगोलिक स्थिति सम्पूर्ण राजस्थान है।

प्रस्तावना

संत दादूदयाल के 152 शिष्यों की नामावली दी जाती है। ऐसा माना जाता है कि संत दादू ने जो 152 शिष्य बनाये हैं। वे सभी जातियों व धर्मों के थे। 152 शिष्यों में से 52 ही प्रधान थे जिन्हें थाम्भों की संज्ञा दी जाती है। शेष शिष्य जिनकी संख्या 100 थी वीतरागी बनकर एकांत चिंतन में लग गये। जिस समय दादू जी सांभर निवास करते थे उसी समय सर्वप्रथम संवत् 1626 में बड़े सुन्दरदास इनके शिष्य हुए और तब से उनके आमेर निवास के समय तक के शिष्यों की संख्या में वृद्धि होती रही।

दादू दीनदयाल के चेले दोय पचास।

कई उडगण कई इन्दु है दिनकर सुन्दरदास।।

इन 52 शिष्यों में प्रमुख रूप से गरीबदास जी, मिस्कीन दास, रज्जब जी, युगल बाई, सुन्दरदास जी, टीलाजी, भखनाजी, जनगोपाल जी, जगजीवनदास जी, मोहनदास, माधोदास जी आदि हैं इनकी रचनाएं मिलती है। इन्हीं दादू पंथी थाम्भों की वाणियों को ही प्रमुख मानकर दादू पंथी साहित्य के विकास में योगदान को रेखांकित किया जाएगा।

Scanned with CamScanner

इसी दृष्टि से विचार करने के लिए अपने प्रस्तावित शोध का विषय दादू पंथी थाम्भों का दादू पंथ साहित्य विकास में योगदान रखा है।

प्रस्तावित शोध कार्य का महत्व

(Importance of Proposed Research Work)

किसी भी साहित्य के महत्व का आकलन दो दृष्टियों से किया जाना चाहिए–

1. साहित्यिक सौन्दर्य और गरिमा की दृष्टि से
2. समाज को वैचारिक आधार प्रदान करने की दृष्टि से

जिस साहित्य में दोनों गुण हों तो उसे सर्वोत्कृष्ट साहित्य मानना चाहिए वह सोने में सुगन्ध कहावत को चरितार्थ करने वाला होता है। प्रभाव एवं गरिमा की दृष्टि से दादू पंथी काव्य का महत्व भक्तिकाल के साहित्य में है। समाज पर दादू पंथी थाम्भों के साहित्य का जो प्रभाव रहा वैसा उदाहरण अन्यत्र कम ही मिलता है।

जनवाणी में अपने अनगढ़ शब्दों में तथा लोकोनुभूति के आधार पर समाज सुधार का कार्य करते हुए भक्ति का मार्ग प्रशस्त करने के कारण दादू पंथी थाम्भों के उत्तराधिकारी सच्चे संत, कवि, भक्त, महात्मा और उपदेशक थे।

इस काल से पूर्ववती काल का आध्यात्मिक जगत जहां संकीर्ण एवं कठोर वर्ण व्यवस्था से जकड़ा हुआ था तथा ईश्वरीय तत्व एक विशिष्ट वर्ग की बपौती बना हुआ था। मध्यकालीन दादू पंथी थाम्भों ने उसे आमजन तक लाने में न केवल सक्षम हुआ बल्कि उसे लगभग बिखेरने के कगार पर पहुंच चुके भारतीय समाज को न केवल सम्भाला बल्कि पश्चिमी विधर्मी आन्दोलन से लड़ पाने में सक्षम बनाया। इस बात में किंचित मात्र भी संदेह नहीं हैं कि अगर तत्कालीन धार्मिक सुधारवादियों ने इस प्राचीन सनातन धार्मिक सभ्यता को न केवल भयंकर आघात पहुंचाया बल्कि इस्लामी धार्मिक प्रचार की आँधी इसको नष्ट ही कर देती।

तत्कालीन मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन के राजस्थान में प्रमुख प्रणेता संत दादू दयाल, सुन्दरदास, रज्जब जी, भखना जी, गरीबदास आदि का स्मरण कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner

गुजरात में जन्में राजस्थान की मरूभूमि में भक्ति की भागीरथी प्रवाहित करने वाले संत दादू दयाल का नाम हिन्दी साहित्य में गौरवपूर्ण महिमा से मण्डितं है।

संत दादू दयाल एवं उनके प्रमुख 52 शिष्यों ने अपनी व्यक्तिगत साधना की उच्च भावभूमि को छोड़कर समाज की निम्न से निम्न, उच्च से उच्च जाति का कल्याण करने हेतु एक क्रान्तिकारी एवं लोक कल्याणकारी आन्दोलन उत्पन्न किया। दादू पंथी थाम्भायतियों की सबसे विशिष्ट उपलब्धि यह कि इन्होने पूर्व नाथों सिद्धों की भाँति लोकधर्म से पलायन न कर समाज के भीतर रहते हुए समाज सुधार एवं लोक मंगल व दादू पंथी साहित्य विकास में महत्वपूर्ण कार्य किया। दादू पंथी थाम्भायतियों के साहित्य में स्नेह, सहृदयता, दया, सरलता, सहजता, मिठास आदि गुणों के कारण पंथ साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। इनमें संत कबीर की आक्रामकता, अक्खड़ता, व्यंग्य, वक्रता और चुनौती की धार नहीं। प्रत्युत उदार आत्मीयता सुधार की अमिट, आशावादिता उनके मूल में है। इनके साहित्य में आग नहीं ऊर्जा है, ताप–उत्ताप नहीं स्नेहिल स्निग्धता है।

दादू पंथी थाम्भायतियों की वाणियों में अनुप्रास, उपमाओं तथा रूपकों का विधान उपदेशों को सरस काव्य का रूप प्रदान कर देता है। इनकी काव्य शैली का उनकी पंथ परम्परा पर भी यथेष्ट प्रभाव पड़ा है।

संत दादू दयाल एवं थाम्भायतियों का व्यक्तित्व सच्चे अर्थों में संवेदनशील था। थाम्भायतियों ने तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण अंकित किया। इनका काव्य आत्मविश्वास आशावाद, आस्था की भावना स्थापित करने में सहायक रहा है। इनके काव्य का मुख्य प्रयोजन है त्रस्त, सन्तप्त, उपेक्षित, उत्पीड़न मानव को परिज्ञान प्रदान करना इनके काव्य जीवन का स्वरूप विश्लेषण और व्याख्या उपलब्ध होती है। दादू पंथी थाम्भों का काव्य युग बोध, दादू पंथ विकास, काव्य चेतना, युग चेतना का अथाह सागर है। इनकी रचनाओं में मानव की क्षुद्रता, स्वार्थ, असत्यप्रियता, संकीर्णता, अर्थ लोलुप्ता, कामुकता आदि का विवरण एवं विश्लेषण हुआ है।

इसी प्रकार सामाजिक असंगतियों धार्मिक विडम्बनाओं, बहुदेववाद, मूर्तिभंजन आदि समस्याओं की अभिव्यक्ति और उनका निदान भी दादू पंथी थाम्भों के साहित्य में मिलता है। सन्देह नहीं है कि दादू पंथी थाम्भायति अपने समय के समाज के सच्चे प्रहरी थे। सत्य का अनुसरण करते हुए धर्म परम्परा, शास्त्र, शासक प्रथा धर्म के ठेकेदारों आदि की भी परवाह नहीं करते थे तथा

Scanned with CamScanner

समाज के सभी वर्गों को सम्मान देते हुए समाज में मानव मात्र की प्रतिष्ठा स्थापित करने का कार्य दादू पंथी थाम्भायतियों के द्वारा बखूबी से किया।

तत्कालीन परिस्थितियों (बाहरी आक्रमण तथा क्षत्रिय वर्ग द्वारा समाज के अन्य वर्ग पर अत्याचार) में सभी जातियों धर्मों के मध्य भाईचारा पैदा करने के लिए दादू पंथी थाम्भायती आगे आए। इन्होने ईश्वर की एकता और सर्वव्यापकता को स्थापित किया और मानव मानव के बीच मूलभूत एकता और सौहार्द्र को निरूपित किया।

दादू दून्यू भाई हाथ पग, दून्यू भाई कान।

दून्यू भाई नैन द्वै, हिन्दू मुसलमान।।

दादू पंथी थाम्भों के साहित्य में दलित विमर्स चेतना जाति पाति के बन्धन जिसमें जकड़ी जा कर मानवता सिसकियां भर रही थी बड़े ही अप्रिय प्रतीत होते थे। अस्तु उन सब की निन्दा इनके साहित्य का प्रिय विषय रहा है। यही कारण है कि दादू पंथी थाम्भों के साहित्य का प्रभाव उन जातियों के मध्य अधिक रहा जो दीर्घकाल से दबी, दलित एवं पिछड़ी हुई थी। दादू पंथी थाम्भायतियों ने अपनी साधना द्वारा जहां एक ओर व्यक्तिगत जीवन को उन्नत किया वहीं दूसरी ओर लोक जीवन को भी उदात्त की ओर अग्रसर करने का पुण्य प्रयास किया। अन्तः एवं बाह्य दोनों ही रूपों की पवित्रता और कथनी और करनी की एकरूपता दादू पंथी थाम्भायतियों की जीवन यात्रा का प्रबल संबल थी। यह निर्विवाद है कि दादू पंथी थाम्भायतियों ने अपने युग की आवश्यकता को समझा और बड़ी ही निष्ठा के साथ अपनी विमल वाणी के उद्घोष द्वारा जनजीवन में एक क्रान्ति उपस्थित की।

धर्मान्धता, रूढ़ियों का अन्धानुकरण, जातिगत भेदभाव, सम्प्रदाय कट्टरता आदि उन समस्त विखण्डनकारी प्रभावों के प्रति उन्होने विद्रोह और उस व्यापक सत्य को परमत्व को प्राप्त करने का आग्रह किया जो सभी मानवों हेतु सम था। कविता करना दादू पंथी थाम्भायतियों का उद्देश्य नहीं था वरन काव्य कर्म की अपेक्षा उपदेश उनका प्रधान ध्येय था। इसी हेतु थाम्भायतियों ने अपने काव्य की भाषा आम बोल चाल की भाषा को ही बनाया। जिससे वह निम्न से सभी वर्ग तक अपनी वाणी को पहुंचाया शब्द और उनके प्रयोग, समकालीन वातावरण अनुरूप उनकी भाषा में गुजराती, मारवाड़ी, सिंधी, पंजाबी, मराठी, ब्रज के साथ ही फारसी शब्दावली का भी संयोग देखने को मिलता है। एकेश्वरवाद का नारा, मानव की प्रतिष्ठा उदात्त गुणों की स्थापना, शुद्ध आचरण, नैतिकता, जीवन

Scanned with CamScanner

मूल्यों, सामाजिकता, कुप्रथाओं का विरोध, सामाजिक असमानता, विश्वव्यापी मानव धर्म की स्थापना के साथ साथ हिन्दू मुस्लिम भेदों को मिटाना आदर्श रूप समाज के समक्ष प्रस्तुत कर समाज को दीर्घकालीन नैतिक पतन से उभार कर उच्चता सात्विकता की ओर अग्रसर करने का सराहनीय प्रयास दादू पंथी थाम्भायतियों के साहित्य में किया है।

सामाजिक स्तर पर दादू पंथी थाम्भायतियों ने पाखण्ड एवं अन्धविश्वासों का सहजता से खण्डन किया मिथ्या आडम्बरों के प्रति जैसी अनास्था उन्होनें व्यक्त की आचरण शुद्धता और सत्य की वाणी का प्रभाव निम्न के साथ साथ उच्च वर्ग पर भी अत्यधिक रहा। सर्वजन सुलभ तथा समन्वय वादिता के कारण ही दादू पंथी थाम्भायतियों के साहित्य का प्रचार प्रसार समाज के प्रत्येक स्तर पर हो सका।

मन, बुद्धि और आत्मा को समान रूप से रसान्वित कर एक विशेष प्रकार का आशान्वित जीवन इस साहित्य ने निम्न से उच्च तक प्रत्येक जन को प्रदान किया तथा समाज के किसी भी क्षेत्र को इससे अछूता न रखा।

''समाज ऐसा है (यथार्थ)'' तथा ''समाज ऐसा होना चाहिए (आदर्श)'' की तर्ज पर दादू पंथी थाम्भायतियों संत ह्रदय की शीलता सम्पन्नता एवं पर दुख कातरता से सभी प्राणियों को अपनी और खींचना प्रारम्भ कर दिया। वे स्वयं को महत्वहीन समझते तथा दूसरों को सदा सम्मानित करते इसी में उन्हें आत्म संतोष का अनुभव होता।

कामादि विकार रहित मनसा वाचा कर्मणा प्रभु पर प्रीति रखने के कारण उन्हें समस्त प्राणियों में परम तत्व की अनुभूति होती, इस हेतु ही वह सबका और सब उसके बन जाते हैं। सभी में उस परम तत्व का आभास तथा सबके लोक मंगल की कामना हेतु उनके ह्दय में निरन्तर शांत एवं अमृत की धारा प्रवाहित होती रहती है।

दादू पंथी थाम्भायतियों ने अपनी साखी, शब्द पदों आदि के माध्यम से आत्मचिंतन प्रसूत भावों, विचारों एवं तथ्यों का प्रतिपादन किया। वे अपनी आत्मा के स्वर को दूसरों को भी सुनाना चाहते थे क्योंकि उनका विश्वास था कि स्वानुभूति की भूमिका में प्रतिष्ठित हो कर उन्होने जो तत्व चिंतन किया वही मानव मात्र हेतु श्रेष्ठ है।

दादू पंथी थाम्भायतियों ने साहित्य के आदर्श का अपने साहित्यकारों के समक्ष रखा। इनके काव्य में स्वान्तः सुखाय की अपेक्षा पर हित सुखाय की

Scanned with CamScanner

भावना गहरी समाई हुई है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। इसी उक्ति को इन्होने अपने काव्य का केन्द्र बिन्दु बनाया। तत्कालीन वातावरण और जनमानस की आवश्यकताओं की पूति हेतु सरल, सहज व निर्मल वाणी में अपने भाव कहे।

शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य

(Main objectives of the research work)

प्रस्तावित शोध विषय **''दादू पंथी थाम्भों का पंथ साहित्य विकास में योगदान''** के अनेक उद्देश्य यह हैं कि दादू पंथ के प्रवर्तक दादू दयाल के कृतित्व एवं व्यक्तित्व का परिचय देना, दादू जी के बहुआयामी व्यक्तित्व को समझने की चेष्ठा, दादू पंथी थाम्भों का उद्भव एवं विकास, थाम्भायतियों के द्वारा रचित साहित्यिक रचनाओं (वाणियों) की महत्ता बताना। दादू पंथ साहित्य में इन साहित्यिक कृतियों का योगदान और वर्तमान में इनकी प्रासंगिकता को प्रकाश में लाना। दादू पंथी 52 थाम्भों का परिचय एवं उनकी शिष्य परम्परा को बताना।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

अतीत के संचत ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन किया जाता है एवं उनके आधार पर शोध परियोजना की दिशा निर्धारित की जाती है। शोध को गति प्रदान करने के उद्देश्य से वैचारिक पोषण की आवश्यकता होती है अतः शोध साहित्य की समीक्षा आवश्यक है।

संत दादू जी एवं उनके पंथ पर अब तक साहित्य में कई प्रकार से विचार हुआ। अनेक पुस्तकों, ग्रन्थों, पत्र–पत्रिका एवं शोध प्रबन्धों के माध्यम से दादू व उनके पंथ को समझने का प्रयास किया गया।

यह परम्परा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल से अनवरत चली आ रही है। आचार्य शुक्ल के अतिरिक्त परशुराम चतुर्वेदी, पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, रामबक्ष, जन गोपाल स्वामी, सुधाकर द्विवेदी, बलदेव वंशी जैसे अनेक विद्वजनों ने संत दादू पर एवं दादू पंथ के सम्बन्ध में सोचने, विचारने व समझने समझाने का प्रयत्न किया है।

पूर्व में दादू एवं पंथ पर स्वीकृत शोध कार्यों में प्रमुख रूप से विनोद मील ने ''दादू दयाल के काव्य में सांस्कृतिक जीवन'' शोध निर्देशक डॉ. मंजु सक्सेना

Scanned with CamScanner

के निर्देशन में किया। बरखा बंसल ने "दादू दयाल पंथी मुस्लिम संतों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना" शोध निर्देशक डॉ. सुनिता कुलश्रेष्ठ के निर्देशन में किया। "दादू पंथ उसके साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन" केशव प्रसाद सिंह ने काशी विद्यापीठ वाराणसी से शोध कार्य किया। कन्हैयालाल सिनवर ने "दादू पंथी काव्य का समाज शास्त्रीय अध्ययन"। हरफूल सिंह ने "शेखावाटी में दादू समुदाय के संत कवि" उदयपुर से शोध किया। अतुल दहिया "स्वामीनारायण दास द्वारा लिखित दादू पंथ परिचय का आलोचनात्मक अध्ययन डॉ. नन्दकिशोर पाण्डे के निर्देशन में राजस्थान विश्वविद्यालय से शोध किया गया। "दादू काव्य का सांस्कृतिक अनुशीलन" पर ईश्वर सिंह ने शोध कार्य किया। संत कवि दादू के काव्य का दार्शनिक अनुशीलन गीता चौबे ने शोध कार्य किया। "दादू दयाल के काव्य में मानव मूल्य" पंजाब विश्वविद्यालय से बीना कुमारी ने शोध कार्य किया। शगुफ्ता नियाज ने "दादू के काव्य में रूपक एक विवेचन" अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ से डॉ. रमेश शर्मा के निर्देशन में किया। डॉ. योगेन्द्र कुमार राजोरिया ने दादू वाणी का दार्शनिक विश्लेषण डॉ. योगेश गुप्ता के निर्देशन में शोध किया।

उपर्युक्त शोध प्रबन्धों का विश्लेषण एवं साहित्य समीक्षा करते हुए यह महसूस हुआ कि दादू पंथी थाम्भों का दादू पंथ साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अतः प्रस्तुत विषय पर शोध कार्य होने के उपरान्त भी शोध रिक्तता उपस्थित है। इसी कारण "दादू पंथी थाम्भों का दादू पंथ साहित्य विकास में योगदान" शीर्षक शोध प्रबन्ध हेतु चयन किया गया।

शोध रिक्तता (Research Gaps)

पूर्व वर्णित पुस्तकों तथा शोध प्रबन्धों का अध्ययन करने के पश्चात् पाया कि दादू की दार्शनिकता, सामाजिक प्रासंगिकता, दादू काव्य में रूपक, दादू जीवन दर्शन, दादू के काव्य में मानवमूल्य, दादू सम्प्रदाय का परिचय आदि पर शोध कार्य हो पाया है।

दादू पंथी थाम्भों का दादू पंथ साहित्य विकास में योगदान तत्वों को यदि छात्रों, शोधार्थियों के मध्य रखा जाये तो काफी उपयोगी एवं श्रेयसकर सिद्ध होगा। दादू पंथी थाम्भों के सभी पहलुओं को उजागर करते हुए दादू पंथ की शिष्य परम्परा, दादू पंथी थाम्भों का उद्भव एवं विकास, दादू पंथी थाम्भों की

Scanned with CamScanner

प्रमुख साहित्यिक रचनाएं, उनका विकास में योगदान, वर्तमान महत्व को देखते हुए उसके विभिन्न स्वरूपों को रेखांकित करना होगा।

जहां तक मेरे ज्ञान तथा दृष्टिकोण के अनुसार किसी भी महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में इस विषय पर शोध कार्य नहीं हुआ है। मैं इस अध्ययन के माध्यम से इस रिक्तता को पूर्ण करने का प्रयास करूंगा।

आशा है कि मेरे द्वारा दिया गया शोध साहित्य प्रेमियों, विद्यार्थियों को लाभ पहुंचायेगा।

अतः साहित्य के क्षेत्र में यह प्रस्तावित शोध प्रबन्ध एक नवीन प्रयास होगा।

प्राक्कल्पना (Hypothesis)

मध्यकालीन संत कवियों के काव्य में सामाजिक साहित्यिक, धार्मिक दार्शनिक विषयों पर अनेक शोध कार्य हुए हैं। किन्तु कबीर, रैदास, नानक, दादू आदि पर ही अधिक शोध कार्य हो पाया है।

संत कवि दादू के 52 शिष्यों (थाम्भों) द्वारा तद्युगीन वातावरण में समाज कल्याण सामाजिक परिवर्तन, साहित्यिक विकास में योगदान को वर्तमान तक उचित स्थान नहीं मिल पाने के कारण प्रस्तुत विषय (दादू पंथी थाम्भों का दादू पंथ के साहित्य विकास में योगदान) पर उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए उनको रेखांकित करते हुए निम्नानुसार अनुसंधानिक मान्यताएं तैयार की गई है।

1. अनुसंधान समस्या का विश्लेषण करना।
2. दादू पंथी थाम्भों ने साहित्य में कौन कौन से नये आयाम सृजित किये उनको रेखांकित करना।
3. दादू पंथी थाम्भों की जनभाषा, जन भावना, जनमानस, जन काव्य को उजागर करना।
4. वर्तमान कालीन परिवेश में दादू पंथी थाम्भों के लोक कल्याणकारी पक्ष पर प्रकाश डालना।
5. दादू पंथी थाम्भों का दादू पंथ के साहित्य के विकास में योगदान को रेखांकित करना।

Scanned with CamScanner

प्रयुक्त शोध विधियाँ (Research Methodology)

प्रस्तावित अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन ये जोसेफ गिबाल्डी की पुस्तक एम.एल.ए. हैण्ड बुक का अनुसरण करते हुए कार्ड इन्डेक्स पद्धति से कार्य करना समीचीन होगा। यह पद्धति पूर्ण रूपेण परीक्षित है तथा आधुनिक अध्येताओं द्वारा निर्देशित रूप से प्रयुक्त की जाती है। इस पद्धति में अध्येता द्वारा जितना संभव हो अधिकाधिक संदर्भ संकलित किये जाते हैं, उन्हें एक साथ तर्क सम्मत कम में आयोजित किया जाता है और उनके आधार पर उन्हें समन्वित कर एक चिन्तन प्रसूत शोध के रूप में विकसित किया जाता है। दादू पंथी के थाम्भायतियों एवम उनके उत्तराधिकारियों एवं पीठासीन संतों व विषय विशेषज्ञों से वार्तालाप कर जानकारी लेना। इस शोध कार्य में विवरणात्मक, वर्णनात्मक, विशेषणात्मक, तुलनात्क शोध विधियों द्वारा शोध कार्य किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की अध्याय योजना

(Tentative Chapter Scheme)

1. दादू पंथ प्रवर्तक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
   - 1.1 जन्म तिथि
   - 1.2 जन्म स्थान
   - 1.3 माता–पिता
   - 1.4 प्रारम्भिक जीवन
   - 1.5 गुरू कृपा
   - 1.6 यात्राएँ
   - 1.7 मृत्यु
2. तत्कालीन परिवेश एवं तत्कालीन संत
   - 2.1 कबीर
   - 2.2 नानक
   - 2.3 रैदास
   - 2.4 नामदेव
   - 2.5 मलूकदास
   - 2.6 अन्य संत कवि

Scanned with CamScanner

3. दादू पंथी थाम्भों का इतिहास
   5.1 थाम्भे का अर्थ व परिचय
   5.2 थाम्भों का उद्भव और विकास
   5.3 प्रमुख थाम्भायतियों का परिचय
4. दादू पंथी थाम्भायति कवियों की प्रमुख रचनाएँ
   6.1 दादू वाणी
   6.2 सुन्दर वाणी
   6.3 रज्जब वाणी
   6.4 भखना वाणी
   6.5 टीलाजी की वाणी
   6.6 जगजीवनराम जी की वाणी
   6.7 गरीबदास जी की वाणी
   6.8 अन्य थाम्भायतियों की रचनाएँ
5. थाम्भायतियों के साहित्य का दादू पंथ के विकास में योगदान
   7.1 नवीन दार्शनिक उद्भावनाएं
   7.2 भाषा का परिष्कार व संवर्धन
   7.3 नवीन उपमान एवं प्रतीक योजना
   7.4 सामाजिक मूल्यों में योगदान
      7.4.1 मानवीयता
      4.4.2 साम्प्रदायिक सौहार्द्र
6. थाम्भायतियों के काव्य की सामाजिक सांस्कृतिक चेतना।
   8.1 भाव पक्ष
   8.2 कला पक्ष
   8.3 तदयुगीन वातावरण अनुसार विश्लेषण
7. उपसंहार
8. संदर्भ ग्रन्थ सूची

Scanned with CamScanner

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दादू जन्म लीला परची'' लेखक–जनगोपाल स्वामी
   प्रकाशन–श्री लक्ष्मीनारायण स्वामी ट्रस्ट, जयपुर।
   संस्करण–सन् 2006

2. ''संत कवि दादू और उनका पंथ'' लेखक–वासुदेव शर्मा
   प्रकाशन–शोध प्रबन्ध प्रकाशन, दिल्ली।
   संस्करण–सन्1996

3. ''श्री दादू जी की अनभैवाणी'' लेखक–मंगलदास स्वामी
   प्रकाशन–मंगल प्रेस, जयपुर।
   संस्करण–सन् 1957

4. ''दादू दयाल'' लेखक–रामबक्ष
   प्रकाशन–साहित्य अकादमी, दिल्ली।
   संस्करण–सन् 1985

5. ''दादू ग्रन्थावली'' लेखक–परशुराम चतुर्वेदी
   प्रकाशन–नाकरी प्रचारणी सभा काशी।
   संस्करण–विक्रम संवत् 2023

6. ''उत्तर भारत की संत परम्परा'' लेखक–परशुराम चतुर्वेदी
   प्रकाशन–भारती मण्डल, प्रयाग।
   संस्करण–सन् 2008

7. ''संत कवि दादू'' लेखक–कृष्ण बलदेव
   प्रकाशन–नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
   संस्करण–सन् 1983

8. ''दादू दयाल की बानी (भाग1–2 साखी)''
   प्रकाशन–वेलवेडियर प्रेस प्रयाग
   संस्करण–सन् 1928

9. ''श्री दादू महाविद्यालय रजत जयंती ग्रन्थ''
   प्रकाशन–श्री दादू महाविद्यालय मोती डूंगरी, जयपुर
   संस्करण–सन् 2009

10. ''अनमै वाणी (तीन खण्डों में) टीका सहित'' लेखक–स्वामी जीवानन्द
   प्रकाशन–दादू ज्ञान साहित्य माला, जयपुर
   संस्करण–सन् 1935

Scanned with CamScanner

11.''दादू दयाल का संवाद'' लेखक–सुधाकर द्विवेदी
प्रकाशन–काशी नागरी प्रचारणी सभा, काशी।
संस्करण–सन् 1907
12.''अथ श्री दादू दयाल की वाणी'' लेखक–डॉ. दलजंग सिंह
प्रकाशन–जेल प्रेस, जयपुर।
संस्करण–सन् 1975
13.''श्री स्वामी दादू दयाल की वाणी (अंग बधु)'' लेखक–चंदिका प्रसाद
प्रकाशन–वैदिक यंत्रालय, अजमेर।
14.''श्री दादू पंथ परिचय'' लेखक–स्वामी नारायण दास
प्रकाशन–श्री दादू दयाल महासभा, जयपुर।
15.''श्री दादू चरित्रामृत'' लेखक–नारायण दास
प्रकाशन–जयरामदास स्मृति ग्रंथ माला, जयपुर
16.''दादू दयाल जीवन दर्शन और काव्य'' लेखक–प्रभात कुमार उपाध्याय
प्रकाशन–कलकत्ता।
संस्करण–सन् 1971
17.''दादू दयाल : सिद्धान्त व कविता'' लेखक–किशनाराम विश्नोई
प्रकाशन–निर्मल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
संस्करण–सन् 1996
18.''दादू दास तुम्हारा'' लेखक–डॉ. विद्योतमा
प्रकाशन–नरेश पबिलिशिंग हाउस, शाहदरा, दिल्ली
संस्करण–सन् 2003
19.''दादू काल की सामाजिक प्रासंगिकता'' लेखक–डॉ. रविन्द्र सिंह
प्रकाशन–वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
संस्करण–सन् 1994
20.''संत काव्य में विद्राह के स्वर'' लेखक–नन्दा किरण
प्रकाशन–नचिकेता प्रकाशन, नई दिल्ली।
संस्करण–सन् 1983
21.''हिन्दी संत का उलटबांसी साहित्य'' लेखक–सूमेश चन्द्र मिश्र
प्रकाशन–नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
संस्करण–सन् 1996
22.''संतों की सहज साधना '' लेखक–राजदेव सिंह
प्रकाशन–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
संस्करण–सन् 1976

Scanned with CamScanner

23.''संत सुधा सार'' लेखक–वियोगी हरि
प्रकाशन–सस्ता साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली।
संस्करण सन् 1953

24.संत काव्य (संग्रह)'' लेखक– परशुराम चतुर्वेदी
प्रकाशन–किताब महल, इलाहाबाद।
संस्करण–1952 प्रथम, 1961 द्वितीय, 1967 तृतीय।

25.मध्ययुगीन सूफी और संत साहित्य'' लेखक–मुक्तेश्वर तिवारी
प्रकाशन–सरस्वती प्रकाशन मंदिल
संस्करण–सन्1980

26.''राजस्थान का पिंगल साहित्य'' लेखक–मोतीलाल मेनारिया
प्रकाशन–हितैषी पुस्तक भण्डार, उदयपुर
संस्करण–1952

27.''दादू दयाल'' लेखक–पं. मनोहरलाल जुत्सी
प्रकाशन–हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग
संस्करण–सनु 1930

28.''दादू'' लेखक–क्षिति मोहन सेन
प्रकाशन–शांति निकेतन बुक डिपो, कलकत्ता
संस्करण–वि.सं.–1342

29.''गरीबदास जी की वाणी'' लेखक–गरीब दास
प्रकाशन–श्री लक्ष्मीनारायण ट्रस्ट, जयपुर
संस्करण–2004

30.''सुन्दरदास ग्रन्थावली'' लेखक–सुन्दरदास (सं. हरनारायण शर्मा)
प्रकाशन–राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, कलकत्ता।
संस्करण–सन् 1975

31.''रज्जब जी की वाणी'' लेखक–रज्जब जी
प्रकाशन–ज्ञानसागर प्रेस, बम्बई।
संस्करण–सन् 1975

32.''बषनाजी की वाणी'' लेखक–बषना जी
प्रकाशन–श्री लक्ष्मीनारायण ट्रस्ट, जयपुर।
संस्करण–1993

33.''रज्जब जी सर्वांगी'' लेखक–क्षितिमोहन सेन
प्रकाशन–विश्वभारती ग्रंथालय, कलकत्ता।

Scanned with CamScanner

34. ''सुन्दर दर्शन'' लेखक–डॉ. त्रिलोक नारायण दीक्षित
प्रकाशन–किताब महल, इलाहाबाद।
संस्करण–सन् 1953

35. ''संत साहित्य पुनः मूल्यांकन'' लेखक–राजदेव सिंह
प्रकाशन–आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली
संस्करण–1973

36. संत साहित्य की भूमिका'' लेखक–राजदेव सिंह
प्रकाशन–आर्य बुक डिपो, नइ दिल्ली
संस्करण–1974

37. ''श्री दादूवाणी'' लेखक–नारायणदास स्वामी
प्रकाशन–श्री दादू दयाल महासभा, जयपुर
सस्करण–

38. ''श्री दादू अमर लीला'' लेखक–विनोद कुमार चौधरी
प्रकाशन–अखिल भारतीय श्री मद् दादू पंथ प्रकाश संस्थान नरायणा (जयपुर)
संस्करण–सन्2014

39. ''श्री दादू अनभव वाणी''
प्रकाशन–श्री दादूजी सेवा प्रतिष्ठान समिति, बड़ा गांव, झुन्झुनू (राजस्थान)
संस्करण–संवत् 2061

40. ''दादू जीवन धारा'' लेखक–अशोक बुवानीवाला
प्रकाशन–धारिका पब्लिकेशन्स, दिल्ली
संस्करण–2014

41. ''ज्ञान समुद्र एवं साषी ग्रंथ'' लेखक–सुन्दरदास जी
सम्पादक व्याख्याकार–म. बजरंगदास शास्त्री
प्रकाशन–श्री दादू वाणी परिषद्, नरैना
संस्करण–प्रथम सन् 2008

28.11.14

डॉ. विमला सिंहल
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
मा.ला. वर्मा राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भीलवाड़ा (राज.)

Scanned with CamScanner